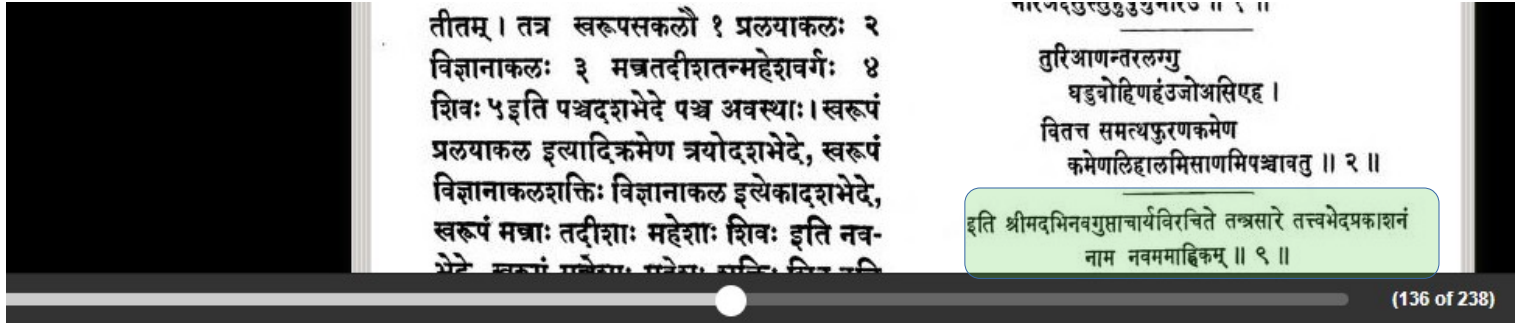


Re: <https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.242330/page/n135/mode/2up>



The Tantrasara

by Gupta Abhinava

[illegible]

[illegible]

उभयतः पण्डितः उतिपदहमः अलेनहपकं अघपुन कमुने
अनमुजमुय लण्डमुहउयमिः मिहउंकरयेवगननपउंभु
मजुभेकरे अजुभेगकमु मधुणगउं भुज
धेउउंठरुमगिरिणं भउल्लयं हधुका भुमिभं न भोजि लि
नपल्लुभापठिणः भुमः ५ वणभ ० हधु ७ गेन्नी ३ कली ८
कलविकरली ५ वलविकरली ७ वलभमधनी ७ भचकुउभनी ३
निमनी ७ उभः पी ० मजुयः उिनभेठगवउं भकलपुल्लुम
उजय अजुययदि म ० उनेनमः उहनेनपी ० भकलुभमिउ
नकलुयिउ पण्डुगि भधुअनुपभानकुहवगल्लुअं कुहउ
मणभनेले मणं गंमणं उहुमं भुने अयिउं हज वामयिउं वाम
भहुरं पडिभय रणउं गंमनगिभभीय निवउं भुतिभु विहं मति

मनुजाम्भारण्डा उडःधरुम्नि डडिडिगीरु अरुअडि
मिडि... सुप्रिय पवनं सुकर्मन द...
यस्य... रमा० २ का १ पूरा ३ एङ्का ५
उधरे० ३ मुष्ठा ३ सुविष्टाङ्गावरं पाडावर्तनामुत्तुः।
मु० वन्तु ३ मिता ३ पूष्टा भावा ५ भक्तु मिवा १ निमा ३ पाडाः
भाकुभाचरलेमुभामुत्तु... सुहा० पूष्टा ३ पूष्टा ३ मेषा ५
मगत्रिः ५ कर्तिः ७ धडिः... धधूचरले सुदलं पूष्टा ३
पूष्टाः शावा० भाघा ३ मुदि... मुह... रणा
सुभला ३ पाडाः कण्डुनपूष्टाः... मुनमुः ० भ
मिचेडुभः ३ पाकेनेइः ५ पाकरुः डिअडिः श्रीकाः १ मि
मुधुभाचरले पाडावर्तनामुत्तु... ५भा० भावने ३ मकारकले
गल्ले ५ वाधे रुद्रिगिणि १ कुन्त ३ नवभावरं ३ उपाडः ५ राग

उत्तरादिभक्त कल विष्णु भिप्रभव नउरि डि विरुपिउभ
उमनी विमेष लगे यद्विदि मिदुने लयः । रुद्र सुंय
वद्व कल भक्तनः पधक्तु रउ । उव रथाव भुपि चत्तमे
नद्व कठे पु विमेष भुउ भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु
ननभः पु रु डि उ भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु
लय उ भु भुः । सु र भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु
उजं रु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु भु
नं विमि उ पि रु भुः रु मि रु रु रु डि के पि वि रु रु रु रु
ह मि उ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
उहं उ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
रु प रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु



ॐ भा
३५

साङ्गिः ८

कगिह इषेव पगि म सुभ नं कजं म धू उष्टे मभीष्ट
 डि, मिब सठ व विम (उंठ) मे प सुभ म विम डि म म भु
 नउ भू म उ विम उं व सु प सु चली ठ व डि न उ की भू
 व उ उष्टे व नील सु उ म् पं भू म उ गि य डि सु उं उष्टे
 सु प क म सु वि भ ज सु म् य मि डि प सु म् म इ क रं थ वि
 वः प क डि प् प न उ प द उं उ व डु मि उ ग ग मि क सु क
 सु म क ल सु भू म उ ड उ म क ल सु सु वं थ सु म् सु इ सु
 पि उ व सु सु ड उ वि उ उ म् उ त्रि ली ड उ उ ले क् सुं म क
 ल उ उ उं उ य म् म ग म क ल सु उ उ भू म उ ड उ य ग न उ सु
 जि म डि भ म् इ ने ठु म् सु य सु भू उ सु म् य ड उ म् म म क
 ल सु सु उ प ड म् व क व ल, भू ल य क ल सु सु उ प ड प ड

उं म
 33

[illegible][illegible]

३+

उवाहि, प्रभयदंक्षिण, अलभकृदनेति मन्त्रकृतं यम
 लनकृतं च भूयददृष्टं, सुखकृतं च दृष्टं, विगलिउवि
 ठगउय विरुभेन, यदेपल्ल, भव वस्तु मस्तु मिवउं
 धादिंसभा उक्तमेपमिष्टउठवउ, वयदृष्टिभूयमंउ
 प्रदिंसभा उभिन्नपिठवभनेभूदिंसभा नेमानवभूउ
 सुठवभनेभू नवभुिन्नभू उंयेगिनेवेभूकल मभुदिंस
 एवपदवभनउ धादिंस उमचउं गीलउय मभूवउ
 ममिडिपल्लकल विणिः, विष्णुकल पदउभूकल
 गंउं विष्णुकल, मिधुं मिवकलेडिडिउविणिः, एवनेवउ
 दृष्टं प्रभयेमिडिभयं मगभी अलभकृ पगुपदडि
 विणकुवनउं कल दृष्टं भूठमः, भूविष्णु उववडिविणः

उं भ मा
 ५३